प्रातः क्लास 10-8-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। मीठे-मीठे रूहानी बच्चों को बाप समझाते हैं, यहां तो है ही रूहानी बच्चे। बाप रोज2 समझाते रहते हैं बरोबर इस दुनिया में ग़रीबों को कितना दुःख है। अभी भी फ्लूइस आद होते हैं तो ग़रीबों को ही दुःख होता है। गांवों में अपने खेती के नज़दीक रहते हैं। उन्हों की खेती का क्या हाल हो जाता है। कितना नुकसान हो जाता है। दुःख तो होता है ना। अपार दुःख है। साहुकारों को सुख है परन्तु वह भी है अल्पकाल के लिए। साहुकार भी बिमार पड़ते हैं, मरते भी हैं। आज फलाना मरा, आज यह हुआ। आज वह प्रेजीडेन्ट है वह भी छोड़नी पड़ती है। घेराव कर उनको उतार देते हैं। यह भी दुःख है ना। बाबा ने कहा है दुःखों की भी लिस्ट बनाओ। किस किस प्रकार के दुःख हैं। सतयुग में अपार सुख होते हैं। वह है ही सुखधाम। दुःखधाम में दुःख अपार है। इस सुखधाम और दुःख को भी तुम बच्चे ही समझते हो। दुनिया कुछ नहीं जानती। सुखधाम दुःखधाम को भेद वह नहीं कर सकते। बाप कहते हैं मैं ही सभी कुछ जानता हूं। तुम बच्चे भी नहीं जानते हो तो फिर और लोग क्या जानते होंगे। तुम जानते हो कितने प्रकार के दुःख हैं। तो यह दुःखों की अपार लिस्ट बनाओ। इससे भी सर्विस सहज होगी। यह तो मानेंगे बरोबर सच्च कहते हैं। यहां दुःख अपार है वहां सुख अपार है। यहां जिनको बड़े2 मकान है, एरोप्लेन आद है वह समझते हैं हम तो यहां स्वर्ग में ही हैं। यह मालूम नहीं है कि यह भी अल्पकाल के लिए है। क्योंकि वह समझते हैं कलियुग तो अजन 40हजार वर्ष चलनी है बाद में फिर सतयुग आवेगा। घोर× घोर अंधियारे में हैं ना। अभी उन्हों को नज़दीक ले आना पड़ता है। बाकी 8वर्ष हैं। कहां वह लाखों वर्ष कहते, कहां तुम 5000वर्ष सिध कर बताते हो। यह 5000वर्ष का चक्र रिपीट होता है। ड्रामा कोई इतनालाखों वर्ष का थोड़ेई होगा। तुम समझ गये हो जो कुछ होता है 5000वर्ष में ही होता है तो यहां दुःखधाम में बिमारियां आद कितने अथाह हैं। अथाह बातें याद करनी पड़ें लिखने के लिए। तुम तो थोड़ी ही मुख्य बात लिखकर इत्यादी2। स्वर्ग में दुख का नाम भी नहीं। अभी बाप समझाते हैं सामने मौत खड़ा है। यह वही गीता का एपीसुड चल रहा है। सिर्फ संगम युग पर ही सतयुग की स्थापना होगी। बाप कहते हैं मैं राजाओं का राजा बनाता हूं। तो जरूर सतयुग का बनाऊंगा ना। बाप कितना समझाते हैं सतयुग में बिमारी आद होती ही नहीं। यहां तो अनेक प्रकार की बिमारियां अनगिनतें हैं। कितनी दवाईयां डाक्टर लगा देते हैं। वहां यह खांसी आद कुछ भी नहीं होती। अभी हम जाते हैं अपने सुखधाम। बाप ले जाते हैं तो बाप को याद करना पड़े। जो निरन्तर याद करते रहेंगे वही ऊंच पद पावेंगे। इसके लिए बाप कितना युक्तियां बताते हैं कि याद की यात्रा की रफ्तार बढ़ाते रहो। जावेंगे तो अपने समय पर ही। कुम्भ के मेले पर भी टाईम पर जाना होता है ना। तुमको भी अपने टाईम पर जाना है। ऐसे नहीं जल्दी2 हम जाकर हम पहुंचे। नहीं। जल्दी2 करना अपने हाथ में नहीं है। यह तो है ही ड्रामा की नूंध। महिमा सारी ड्रामा की है। ड्रामा में सारी नूंध है। यहां कितने जीव-जन्तु आद दुःख देने वाले हैं। सतयुग में यह होते ही नहीं। तो अन्दर ख्याल करना चाहिए है। वहां यह न होगा। सतयुग तो याद आता है ना। सतयुग की स्थापना बाप ही करते हैं। पिछाड़ी में अन्त में सारा ज्ञान बुधि में आ जाता है। जैसे बीज देखो कितना छोटा है, झाड़ कितना बड़ा हो जाता है। यह है जड़ चीज़ें। यह है चैतन्य। इनका किसको भी पता नहीं है। कल्प की आयु हो लम्बी चौड़ी कर दी है। बाप बीज रूप है उनको इस सारे झाड़ का नालेज है। भारत ही बहुत सुख पाते हैं तो दुःख भी भारत ही पाते हैं। बिमारियां आद जितनी भारत में है इतनी विलायत में नहीं होती। वहां बड़ी खबरदारी रहती है। यहां तो छड़ों सदृश्य मनुष्य मरते हैं। क्योंकि आयु छोटी है। अनेक प्रकार की बिमारियां आद हैं। आदमीलोग कितने गंद में रहते हैं। आदत पड़ गई है। यहां मेहतर सफाई करने वाले और विलायत के मेहतर में कितना फर्क है। विलायत में ही फिर सारी कन्वेन्शन यहां आती है। तो अभीकलियुग अन्त में दुःख अपरमअपार है। सतयुग में फिर अपरमअपार सुख होता है। यह तो सहज बात है ना समझने की। सतयुग का तो नाम ही है पैराडाईज़। स्वर्ग। —

वहां की हर चीज़ सतोप्रधान होती है। तुमको समीसा० होंगे। यह है अभी संगम युग। जब कि बाप बैठ समझाते हैं। समझाते रहेंगे, नई2 पायन्ट्स सुनाते रहेंगे। बाप कहते हैं दिन प्रति दिन गुह्य2 पायन्ट सुनाता हूं। आगे थोड़ी ही पता था शिव बाबा इतना बिन्दी है उन में सारा पार्ट भरा हुआ है। फार एवर। तुम पार्ट बजाते आये हो सदैव से तुम किसको भी यह बताओ तो बुध में कितना हलचलमच जावेगा कि यह क्या कहते हैं। इतनी छोटी बिन्दी में इतना पार्ट भरा हुआ है। जो बजाते ही रहते हैं। कब थकते नहीं। किसको भी पता नहीं है। अभी तुम बच्चों को समझ बढ़ती जाती है। अभी तुम समझते हो आधा कल्प है सुख आधा कल्प है दुःख। बहुत दुःख देखकर ही मनुष्य कहते हैं इससे तो मोक्ष पा लेवें। जब तुम सुखधाम में शान्ति में होंगे वहां थोड़ेई ऐसे कहेंगे। यह सारी नालेज अभी तुम्हारी बुधि में है। जैसे बाप को बीज होने कारण उनके पास सारी बेहद की झाड़ की नालेज है। झाड़ का माडल रूप दिखाया है। बड़ा थोड़े ही दिखा सकते। बुधि में सारी नालेज आ जाती है। तो तुम बच्चों की कितनी विशाल बुधि होनी चाहिए। कितना समझाना पड़ता है। फलाने2 इतने समय बाद फिर आते हैं पार्ट बजाने। यह कितना बड़ा हेयुमन ड्रामा है। यह सारा ड्रामा मो कब कोई देख भी न सके। असम्भव है। दिव्य दृष्टि से तो अच्छी चीज़ें देखी जा सकती है। गणेश हनुमान आद यह तो हैं सभी भक्ति मार्ग के। यह तो जैसे बेसमझ से जनावरों का सा० करना होता है। आगे तो देखकर कितना खुश होते थे। गणेश को देखेंगे उनको नमस्कार करेंगे। अभी तो तुम कहेंगे कितने महामूर्ख हैं। परन्तु मनुष्यों की भावना बैठी हुई है तो छोड़ नहीं सकते। अभी तुम बच्चों को तो पुरुषार्थ करना है कल्प पहले मिसल। पद पाने लिए पढ़ना है। यह जो भक्ति मार्ग है उनको नासेन्सीबुल मार्ग कहा जाता है। वह है सेन्सीबुल। अभी सभी को नासेन्सीबुल कहेंगे। भल राजा रानी हो तो भी इस ज्ञान को समझ न सके। यह है ज्ञान वह है भक्ति। भक्ति माना ज्ञान। ज्ञानी और अज्ञानी में रात दिन का फर्क है। भक्ति मार्ग में शास्त्र पढ़ने वाले को ज्ञानी समझते हैं। और पुजारी को भक्त कहते हैं। भक्ति भी आ गई, ज्ञान भी आ गया बाकी क्या चाहिए। मनुष्यों का बुधि में ज्ञान तो बिल्कुल बिल्कुल है नहीं। ज्ञान क्या चीज़ है वह भी नहीं जानते। शास्त्रों को ही ज्ञान समझते हैं। जिससे दुर्गति होती है। परन्तु तुम समझते हो पुनर्जन्म तो हरेक को जरूर लेना ही है। सीढ़ी कैसे उतरे हैं यह भी तुम जान गये हो। वह औरों को भी समझाने लग पड़ेंगे। कल्प पहले भी यही किया होगा। ऐसे ही म्युजियम बनाये कल्प पहले भी बच्चों को सिखाया होगा। पुरुषार्थ करते रहते हैं, करते रहेंगे। ड्रामा में नूंध है। ऐसे स्कूल तो ढेर हो जावेंगे। गली2 घर2 में यह स्कूल है सिर्फ धारण करने की बात है। बोलो तुम्हारे दो बाप हैं। बड़ा कौन ठहरा। उनको ही पुकारते हो रहम करो, कृपा करो। जरूर उसने कब कृपा की है इसलिए बाप को भी लिखते हैं रहम करना, कृपा करना। बाप कहते हैं मांगने से कुछ भी नहीं मिलेगा। हमने तो रास्ता बता दिया। मैं आता ही हूं रास्ता बताने। सारा झाड़ तुम्हारी बुधि में बैठा हुआ है। बाप कितनी मेहनत करते रहते हैं? अभी 3/4 पूरा हो बाकी 1/4 टाईम बचा है। रड़ियां मारते रहते हैं। सर्विस एबुल बच्चे चाहिए। घर घर में गीतापाठशाला चाहिए। और चित्र आद न रखो। सिर्फ बाहर में लिख दो। चित्र तो यह वैज ही बाप है। पिछाड़ी में तुम्हारे यह वैज ही काम में आवेगा। इशारे की बात है। मालूम पड़ जाता है बेहद बाप शिव बाबा जरूर स्वर्ग ही रचेंगे। तो बाप को याद करेंगे तब तो स्वर्ग में जावेंगे ना। यह तो समझते हो हम पतित हैं। याद से ही पावन बनेंगे। और कोई उपाय ही नहीं। स्वर्ग है ही पावन दुनिया। स्वर्ग का मालिक बनना है तो पावन जरूर बनना है। स्वर्ग में जाने वाले फिर नर्क में गोते कैसे खावेंगे। इसलिए कहा जाता है मन्मनाभव। बेहद के बाप को याद करो तो अन्त मते सो गति हो जावेगी। स्वर्ग में जाने वाले विकार में थोड़े ही जावेंगे। भक्त लोग इतना विकार में नहीं जाते हैं। सन्यासी भी पूछते हैं कहां तक छोड़ सकते हो? मास मास जा सकते हो? 15-15 दिन बाद जा सकते हो। बाबा तो अनुभवी है ना। ऐसे पूछते थे। अच्छा हफ्ते में एक दिन। प्रण करो। परन्तु प्रण कोई पालन

थोड़े ही करते थे। जैसे यहां कहा जाता है पवित्र रहो। तो फिर काला मुंह क्यों करते हो। सन्यासियों का भी कोई वचन पालन करते थे। कोई नहीं करते थे। वह ऐसे नहीं कहेंगे पवित्र बनो। क्योंकि खुद ही शादियां आद कराते हैं। फिर कहते हैं अच्छा मास मास विकार में जाओ। गृहस्थियों को ही कहेंगे। ब्रह्मचारी को ऐसे नहीं कहेंगे कि शादी नहीं करना। तुम्हारे पास गन्धर्वी विवाह करते हैं। फिर भी दूसरे दिन ही खेल खलास कर देते। देरी थोड़ी ही लगती है। क्योंकि स्त्री है माया का रूप। कितनी कोशिश करते हैं। दोनो बिगर तो दुनिया भी चल न सके। तो पवित्र बनने का पुरुषार्थ इस समय ही होता है। फिर है प्रारब्ध। वहां तो रावण-राज्य ही नहीं। क्रिमनल ख्यालात ही नहीं होती। क्रिमनल रावण बनाती है। सिविल शिव बाबा बनाते हैं। यह भी याद करना — है। घर घर में क्लास होगा तो सभी समझाने वाले बन पड़ेंगे। घर घर में बीता पाठशाला बनाकर को सुधार देते हैं। ऐसे2 वृधि होती रहेगी। साधारण और गरीब वह जैसे कि हमजिन्स ठहरे। बड़े आदमियों को छोटे आदमियों के सतसंग में आना लज्जा भी आवेगा। क्योंकि सुना है ना जादू है। बहन भाई बनाते हैं। अरे यह तो अच्छा है ना। गृहस्थ में कितनी झंझट होती है। कुत न मिलता है तो औरों से भी ले लेते हैं। गंदे बन पड़ते हैं। यह है ही दुःख की दुनिया। अपार दुःख है। फिर वहां सुख भी अपार होंगे। तुम कोशिश करो लिस्ट बनाने की 25-50 मुख्य2 दुःख की बातें निकालो फिर कहा जावेगा आज्ञद2, बेहद के बाप से वरसा पाने लिए कितना पुरु0 करना चाहिए। बाप इस रथ द्वारा हमको समझाते हैं। यह दादा भी स्टुडेन्ट है। देहधारी सभी स्टुडेन्ट्स हैं। टीचर पढ़ाने वाला है विदेही। तुमको भी विदेही बनाते हैं। इसलिए बाप कहते हैं शरीर का भान छोड़ते जाओ। यह मकान आद कुछ भी नहीं रहेगा। वहां तो सभी कुछ नया मिलेगा। पिछाड़ी में तुमको बहुत सा0 होंगे। यह तो जानते हो उस तरफ विनाश झट हो जावेगा एटामिक बम से। यहां के लिए है खून की नदियां। उस में टाईम लगता है। यहां का मौत बड़ा खराब है। यह अविनाशी खण्ड है ना। इस पर उन्हों का इतना नहीं आवेगा। विलायत से तो बहुत ही दूर है। नक्शे में देखेंगे हिन्दुस्तान तो एक जैसे कोना है। ड्रामा अनुसार यहां उनका असर जाता ही नहीं है। यहां तो खून की नदियां बहनी है। अच्छी तैय्यारी कर रहे हैं। हो सकता है पिछाड़ी में इनको बम्स भी लोन देंगे। बाकी वह बम्स जो फेंकने से ही खत्म हो जाये दुनिया। वह थोड़े ही लोन पर देंगे। हल्के क्वालिटी का देंगे। काम की चीज़ थोड़े ही किसको दी जाती है। विनाश तो कल्प पहले मिसल हो ही जाना है। नई बात नहीं। अनेकानेक धर्म विनाश एक धर्म की स्थापना। भारत खण्ड कब विनाश को नहीं पाता। कुछ तो बचते हैं। सभी मर जाये फिर तो प्रलय हो जाये। दिन प्रति दिन तुम्हारी बुधि विशाल होती जावेगी। तुमको बहुत रिगार्ड रहेगा। अभी इतना रिगार्ड थोड़े ही है। तब तो कम पास होते हैं। बुधि में आता नहीं है। कितनी सजा खानी पड़ेगी। फिर आवेंगे भी ऊंची से गिरते हैं फिर की कमाई चट हो जाती है। काले के काले बन जावेंगे। फिर वह खड़े हो न सके। कितने जाते हैं, कितने जाने वाले भी हैं। खुद भी समझ सकते हैं इस हालत में शरीर छूट गया तो हमारी क्या गति होगी। समझ की बात है ना। बाप कहते हैं तुम बच्चे शान्ति स्थापन करने वाले, तुम्हारे में ही अशान्ति होगी तो पद भ्रष्ट हो जावेंगे। किसको भी दुःख देने की दरकार ही नहीं। बाप कितना प्यार से सभी को बच्चे2 कह बात करते हैं। बेहद का बाप है ना। सारी दुनिया की इसमें नालेज है। तब तो समझाते हैं। इस दुनिया में कितने अनेकानेक दुःख हैं। ढेर के ढेर। बातें तुम लिखकर दो। जब तुम यह सिध कर दिखावेंगे तो समझेंगे यह बात तो बिल्कुल ठीक है। यह अपार दुःख तो सिवाय एक बाप के कोई दूर कर नहीं सकते। दुःखों की लिस्ट होंगी तो कुछ न कुछ बुधि में बैठेगा। जो अच्छी रीत समझते हैं वह कर के दिखावेंगे। औरों की तो सुना अनसुना कर देंगे। उनके लिए ही गाया जाता है रीढ क्या जाने ·····। सान्डा देह-अभिमानी को कहा जाता है। सान्डों का एक गांव भी होता है। क्रोधी को सान्डा कहा जाता है। बाप समझाते हैं तुम बच्चों को ऐसा गुल2 बनना है। कोई अशान्ति, गन्दगी न होनी चाहिए। अशान्ति फैलाने देहअभिमानी चुहरी हैं। चुहरी को छूना नहीं होता है। अच्छा रूहानी बच्चों को रूहानी बापदादा का याद प्यार गुडमार्निंग और नमस्ते।